

# SMT. CHINNAPILLAI

Smt. Chinnapillai is a renowned social worker and is associated with “Kalanjiam Mutual Movement”, a collective body of Kalanjiam women SHGs. The SHGs tagged as “Kalanjiam” are promoted by DHAN Foundation, Madurai. More than two lakh women leaders from SHGs, Cluster bodies and federations are part of the movement. The movement is represented by 15 women leaders from various states in India.

2. Born on June 30, 1951 in a dalit family at Pillucheri, a small village in Madurai-Alakarkoil road, Smt. Chinnapillai at her young age, toiled as agriculture labour at farms and reared livestock to contribute economically to her family. Got married at the age of 12, she had two sons and three daughters. As an agriculture labour, she experienced exploitation and nepotism as part of the labour market. She managed the situation four decades back by organising labour group and negotiated 'wages for work' with the land owners. She became a labour contract leader (Kothu leader) for providing regular works and reasonable wages in agriculture. Despite being the headwoman of the labour group, she worked along with them in the field and ensured wage payment on time. She made sure that elderly and differently-abled persons were part of her labour contract group.

3. In 1990, DHAN team initiated the Kalanjiam SHGs by organizing the poor women agriculture laborers in her village. Smt. Chinnapillai organised a SHG “Pillu Kalanjiam” consisting of 15 women from her labour team. She took the responsibility as the 'Secretary' of the group. Enthused by the newly found economic independence guiding them to prosperity, she spared her time and energy to spread the concept of SHG to fellow women in her neighbouring villages. Four decades back SHGs were unheard and seen with skepticism. Her active engagement in the group elevated her to become the cluster secretary and then as a federation secretary.

4. Around the same time, as many as ten initiated SHG locations had federated as community organisations to take forward their contextual development needs. Each federation came up with its own set of cluster and federation leaders. In 1998, these women leaders collectively formed the “Kalanjiam Mutual Movement” with representative leaders from ten federations comprising 30,000 women, organised into SHGs. The community leaders took the mission to spread the concept of Kalanjiam Community Banking to far flung areas in India. Smt. Chinnapillai was one among the movement leaders, elected as the Secretary for the movement. These women leaders unrelentingly spread the benevolence of SHG and organised the poor and downtrodden into SHGs in different terrain (rural, urban, tribal and coastal) reaching out to 1.2 million families bringing socio-economic transformation in their lives.

5. Smt. Chinnapillai has served as a member of TNAU Board to guide the prestigious institution to have pro-poor initiatives. She has been representing the movement in bankers steering committee meeting and in district and state forums to champion the cause of the poor. She has taken up the cause of women development on radio and television shows and encouraged the youth to take up development career. She has been part of the Gandhian Movement to spearhead abolition of alcohol.

6. Lauding the success of these movement leaders and their contributions in seeding the SHG concept through movement thereby empowering poor women en-masse, in 2000, the Government of India awarded Stree Shakti Puraskar to Smt. Chinnapillai. She has also received Janaki Devi Bajaj Puraskar Award in 2001, Porkizhi Award in 2001 and the prestigious Avvaiyar Award in the year 2018 from Tamil Nadu Government. All along, she has symbolized the movement and has spared the prize rewards for the cause of the movement leaders welfare, who tirelessly work for the poor people like her.

पद्म श्री



# श्रीमती चिन्नापिल्लै

श्रीमती चिन्नापिल्लै एक ख्याति प्राप्त सामाजिक कार्यकर्ता हैं और कलानजिअम महिला स्व-सहायता समूह के एक सामूहिक निकाय "कलानजिअम म्युचुअल मूवमेंट" से जुड़ी हुई हैं। "कलानजिअम" नाम के स्व-सहायता समूह को डीएचएएन फाउंडेशन, मदुरै द्वारा चलाया जाता है। स्व-सहायता समूहों, कलस्टर निकायों और फेडेरेशनों की दो लाख से अधिक महिला नेता इस आन्दोलन का हिस्सा हैं। भारत के विभिन्न राज्यों की 15 महिला नेताओं द्वारा इस आन्दोलन का प्रतिनिधित्व किया जाता है।

2. आपका जन्म 30 जून, 1951 को मदुरै-अलाकरकोईल रोड के एक छोटे से गांव पिलुचेरि के दलित परिवार में हुआ था। बहुत कम उम्र में ही आपको खेतों में कृषि मजदूर के रूप में कार्य करना पड़ा और अपने परिवार के लिए आर्थिक योगदान देने के लिए पशु पालन भी किया। 12 वर्ष की आयु में ही आपका विवाह हो गया, आपके दो पुत्र और तीन पुत्रियां हैं। कृषि मजदूर के रूप में, आपको शोषण और श्रम बाजार में कुनबापरस्ती का सामना करना पड़ा। आपने चार दशक पहले श्रम समूहों को संगठित करके स्थिति को संभाला और भू-स्वामियों के साथ 'कार्य के लिए मजदूरी' पर बात-चीत की। आप कृषि क्षेत्र में नियमित रूप से काम दिलवाने और उपयुक्त मजदूरी दिलवाने के लिए मजदूरों की ठेकेदार नेता (कोठू नेता) बन गई। श्रमिक समूह की मुखिया महिला होने के बावजूद, आपने खेतों में मजदूरों के साथ काम किया और समय पर मजदूरी का भुगतान किया जाना सुनिश्चित किया। आपने यह भी सुनिश्चित किया कि आपके मजदूर ठेका समूह में बुजुर्ग और दिव्यांगजन भी शामिल रहें।

3. वर्ष 1990 में, डीएचएएन टीम ने आपके गांव में गरीब महिला कृषि मजदूरों को संगठित करके कलानजिअम में स्व-सहायता समूहों की पहल की। आपने "पिल्लू कलानजिअम" नामक एक स्व-सहायता समूह बनाया जिसमें आपकी श्रमिक टीम की 15 महिलाएं शामिल थी। आपने इस समूह के 'सचिव' के पद की जिम्मेदारी संभाली। समृद्धि की ओर ले जाने वाली नई आर्थिक स्वतंत्रता से प्रोत्साहित होकर, आपने पड़ोसी गांवों की महिला साथियों को स्व-सहायता समूह के बारे में बताने का समय निकाला। चार दशक पूर्व स्व-सहायता समूहों का नाम सुनने में नहीं आता था और इन्हें संदेह की नजर से देखा जाता था। समूह में सक्रिय रूप से कार्य करने के कारण आप पहले कलस्टर सचिव और बाद में फेडरेशन सचिव के पद पर पहुंची।

4. इसी दौरान लगभग दस स्व-सहायता समूह अपनी प्रासंगिक विकास आवश्यकताओं को आगे बढ़ाने के लिए समुदाय संगठन बन गए। प्रत्येक फेडरेशन ने कलस्टरों के अपने निजी सेट और फेडरेशन नेता बना लिए। वर्ष 1998 में, इन महिला नेताओं ने संगठित होकर दस फेडरेशनों के प्रतिनिधि नेताओं के साथ "कलानजिअम म्युचुअल मूवमेंट" का गठन किया, इसमें स्व-सहायता समूहों के रूप में संगठित 30,000 महिलाएं शामिल थी। समुदाय के नेताओं ने कलानजिअम कम्युनिटी बैंकिग की अवधारणा को भारत के दूर-दराज क्षेत्रों में ले जाने का मिशन आरंभ किया। आप इस मूवमेंट के नेताओं में से एक थी और आपको मूवमेंट के सचिव के रूप में चुना गया। इन महिला नेताओं ने लगातार स्व-सहायता समूहों की भलाई के कार्यों का प्रचार किया और 1.2 मिलियन परिवारों के जीवन में सामाजिक आर्थिक परिवर्तन लाकर विभिन्न क्षेत्रों (ग्रामीण, शहरी, जनजातीय और तटीय) में उन तक पहुंचने के लिए गरीबों और पददलितों को स्व-सहायता समूहों में संगठित किया।

5. आपने टीएनएयू बोर्ड के सदस्य के रूप में गरीब समर्थक पहलों के लिए इस प्रतिष्ठित संस्थान को मार्गदर्शन देने के लिए अपनी सेवाएं भी दी हैं। आप गरीबों के कल्याण का समर्थन करने के लिए बैंकर्स स्टीरिंग कमेटी की बैठकों में और जिला तथा राज्य स्तर के मंचों पर मूवमेंट का प्रतिनिधित्व करती रही हैं। आपने रेडियो और टेलिविजन कार्यक्रमों में महिलाओं के कल्याण हेतु आन्दोलन शुरू किया है और विकासोन्मुखी पेशे अपनाने के लिए युवाओं को प्रोत्साहित किया है। आप शराब उन्मूलन के लिए गांधीवादी आन्दोलन को आगे बढ़ाने में सक्रिय रही हैं।

6. इन मूवमेंट नेताओं की सफलता की सराहना करते हुए और स्व-सहायता समूह की अवधारणा को शुरू करके इसके द्वारा सामूहिक रूप से महिलाओं के सशक्तिकरण में इनके योगदान के लिए, भारत सरकार ने वर्ष 2000 में, आपको स्त्री शक्ति पुरस्कार से सम्मानित किया। आपने तमिलनाडु सरकार से वर्ष 2001 में जानकी देवी बजाज पुरस्कार, वर्ष 2001 में पोरकिझी पुरस्कार और वर्ष 2018 में अव्वैयार पुरस्कार भी प्राप्त किया है। आप शुरुआत से मूवमेंट का प्रतीक रही हैं और उन सभी मूवमेंट नेताओं के कल्याण के लिए उन्हें पुरस्कार दिलाने के लिए भी कार्य किया जिन्होंने आपकी तरह गरीब लोगों के लिए अथक प्रयास किया है।।